संसद के केंद्रीय कक्ष में पूर्व प्रधानमंत्री श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी तथा महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी की स्मृति में आयोजित 'देश भर से आए युवाओं से संवाद' कार्यक्रम में माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी और भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की जयंती पर मैं उन्हें प्रणाम करता हूं। भारत की संसद के इस ऐतिहासिक कक्ष में जहां आजादी की गाथा लिखी गई, भारत का संविधान बनाया गया, उस ऐतिहासिक केन्द्रीय कक्ष में अलग-अलग राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों से आए हुए ऊर्जावान और सामर्थ्यवान नौजवान, आज दो भारत रत्न पंडित मदन मोहन मालवीय जी और स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी जी को श्रद्धांजलि देने आए हैं।

आज महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी की 161वीं जयंती है। पंडित मदन मोहन मालवीय जी को भारत की शिक्षा प्रणाली में योगदान देने और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रणेता के रूप में भारत हमेशा याद करता रहता है। सन् 1916 में उन्होंने शिक्षा, संस्कार और संस्कृति का एक विश्वविद्यालय बनाया था। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय आज भी देश का सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालय है। एक कठिन परिस्थिति के अंदर जब उनके पास पढ़ने के लिए पैसे नहीं थे, तब उनकी मां ने अपने कड़े बेचकर उन्हें पढ़ाया-लिखाया। लेकिन, उनके मन में यह भाव था कि देश का हर नौजवान अच्छी और उच्चतम शिक्षा प्राप्त करे, अच्छे संस्कार प्राप्त करे और एक देशभक्त नौजवान बने।

वह इसके लिए पूरे देश में निकले, लोगों से धन इकट्ठा किया और उस समय एक ऐसा विश्वविद्यालय बनाया, जिसने आजादी की लड़ाई में बहुत बड़ा योगदान दिया और आज भी यह संस्कार और संस्कृति का विश्वविद्यालय है। वह ऐसे बौद्धिक नौजवानों को तैयार कर रहा है, जो देश और राष्ट्र के प्रति समर्पण भाव रखते हैं।

आज हम स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी जी की भी जयंती मना रहे हैं। हम इस दिन को सुशासन दिवस के रूप में भी मनाते हैं। अटल बिहारी वाजपेयी जी एक सर्वमान्य नेता थे। उनका विराट व्यक्तित्व था, सभी दलों में उनके प्रति विशेष सम्मान और विशेष रूप से देश के प्रति समर्पण था। किस तरीके से शासन में सुचिता आए, स्वच्छता आए, शासन जनता के प्रति जवाबदेह हो, इसलिए एक पारदर्शी और जवाबदेही शासन के रूप में एवं उनके किए गए कार्यों के कारण, आज पूरे देश में सुशासन दिवस मनाया जाता है।

इसी संसद के अंदर माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने लोक सभा में 10 कार्यकाल तक और राज्य सभा में 2 कार्यकाल तक अपने संसदीय कार्यों के माध्यम से देश की जनता और संसद को एक दिशा देने का काम किया था। भारत के संविधान निर्माताओं ने लोकतांत्रिक संसदीय प्रणाली को अपनाया था। उस लोकतांत्रिक संसदीय प्रणाली से किस तरीके से हम समाज के अंतिम व्यक्ति की आवाज, उनकी कठिनाइयां, उनकी समस्याएं, उनकी बातों की अभिव्यक्ति संसद के अंदर करके लोगों को न्याय दिला सकते हैं, एक अच्छा शासन बना सकते हैं। उनकी अपेक्षाएं और आकांक्षाएं संसद के माध्यम से पूरी हों, उसके लिए उनका संसदीय कार्यकाल अमिट उदाहरण है और वह आज भी हम सबको नई प्रेरणा देता है।

आज आप सब देश के अलग-अलग राज्यों से आए हैं। अभी मैं आपको सुन रहा था, किस तरीके से आप महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी के जीवन के बारे में, पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी जी के जीवन के बारे में, आप जिस तरीके से चर्चा और संवाद कर रहे हैं, आज उसको पूरा देश देख रहा है। अगर देश को आगे बढ़ाने में किसी का सबसे बड़ा योगदान है, तो वह आप जैसे नौजवानों का है। जो सामर्थ्यवान हैं, जो बौद्धिक क्षमता से परिपूर्ण हैं, जिनका तकनीकी-विज्ञान के अंदर अनुभव है, जिसके कारण आज भारत पूरी दुनिया का नेतृत्व कर रहा है, वह आप जैसे नौजवानों के कारण कर रहा है।

पंडित मदन मोहन मालवीय जी ने किन कठिन परिस्थितियों के साथ शिक्षा प्राप्त की। किस तरीके से एक शिक्षक परिवार में पैदा हुए अटल बिहारी वाजपेयी जी के अंदर देश और राष्ट्र के प्रति समर्पण और निष्ठा थी कि जो कुछ भी मेरा है, वह देश के लिए है। अभी उत्तराखंड की एक वक्ता बता रही थीं, केरल के एक नौजवान बता रहे थे। पश्चिम बंगाल और राजस्थान के नौजवान उनके विराट व्यक्तित्व के बारे में बता रहे थे। उन्होंने अपने जीवन में जो कुछ भी अर्जित किया, वह देश के प्रति समर्पित कर दिया एवं देश को आगे बढ़ाया। वह एक ऐसे विराट व्यक्तित्व थे, जिन्होंने उस समय दुनिया को बता दिया। उन्होंने पोखरण में परमाणु परीक्षण करके अपनी शक्ति और ताकत को दिखाया। हमारे वीर सैनिकों की ताकत, उनकी ऊर्जा एवं उनके सामर्थ्य के बल पर हमने कारगिल युद्ध में विजय प्राप्त की। उन्होंने किस तरह से देश के गांवों को जोड़ने का काम किया। किस तरीके से भारत रोड कनेक्टिविटी में एक हो, उसके लिए उनका योगदान हमेशा याद रखा जाएगा।

आज आप देखिए, चाहे टेक्नोलॉजी या विज्ञान के क्षेत्र में हो, नए स्टार्टअप के अंदर हो, हमारे नौजवानों ने दुनिया को बताया है कि अगर किसी भी चुनौती का समाधान निकलेगा, तो भारत की धरती से निकलेगा, भारत के नौजवानों के सामर्थ्य और बौद्धिक क्षमता के कारण निकलेगा। इसीलिए आज हम यहां पर आए हैं। हम इन विराट व्यक्तियों के जीवन के बारे में जानेंगे, उनके कृतित्व के बारे में जानेंगे, उनके समर्पण के बारे में जानेंगे। आज आप यहां से जो संदेश और विचार लेकर जाएंगे, उन विचारों को देश के हर युवा तक पहुंचाने का काम करेंगे। हमें भी भारत में ऐसे नौजवानों की शक्ति और सामर्थ्य चाहिए, जो आने वाले समय में भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में संकल्पित होकर लक्ष्य और ध्येय के साथ काम करें। हमारा जो कुछ भी जीवन है, वह राष्ट्र और देश के प्रति समर्पित है, आप यहां से यह भाव लेकर जाएंगे।

सभी राज्यों से आए हुए नौजवानों भाइयों और बहनों का मैं संसद के इस केन्द्रीय कक्ष में स्वागत करता हूं, अभिनंदन करता हूं। मुझे आशा है कि आज आप जो संकल्प और आत्म-विश्वास

लेकर जाएंगे, उसको पूरा करेंगे और आपसे देश के अन्य नौजवानों को प्रेरणा मिलेगी। महापुरुषों के जीवन की गाथाएं, उनके विचार, उनके विचार-दर्शन, हमारे इतिहास और हमारी विरासत को याद करते हुए आधुनिक भारत के निर्माण में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहेगा।